पाँचवाँ अध्याय
लिंगानुशासन

प्राकृत में संस्कृत के समान पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग ये तीन ही लिंग माने गये हैं। प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक समस्त संज्ञाएँ उक्त तीनों लिंगों में विभक्त हैं। साधारण लिंगव्यवस्था संस्कृत के समान ही है, किन्तु जिन शब्दों में अन्तर है, उन्हीं का यहाँ निर्देश किया जाता है।

(१) प्रावृष् , शरद् और तरणि शब्दों का पुल्लिंग में प्रयोग होता है।[१] यथा–

पाउसो < प्रावृष–संस्कृत में यह शब्द स्त्रीलिंग है।
सरओ < शरद्– ,, ,,
तरणी < तरणी– ,, ,,

(२) दामन्, शिरस् और नभस् को छोड़कर शेष सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं।[२]

(क) सकारान्त शब्द–

जसो < यशस्–यशः–संस्कृत में यह शब्द नपुंसकलिंग है।
पओ < पयस्–पयः– ,, ,,
तमो < तमस्–तमः– ,, ,,
तेओ < तेजस्–तेजः– ,, ,,
सरो < सरस्–सरः– ,, ,,

(ख) नकारान्त शब्द

जम्मो < जन्मन्–जन्म– ,, ,,
नम्मो < नर्मन्–नर्म– ,, ,,
कम्मो < कर्मन्–कर्म– ,, ,,
वम्मो < वर्मन्–वर्म– ,, ,,

विशेष–

(क) वयं < वयस्–वयः–संस्कृत में यह नपुंसकलिंग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिंग ही माना गया है।

---

१. प्रावृट्शरत्तरण्यः पुंसि–८।१।३१. हे.।
२. स्नमदाम–शिरो–नभः–८।१।३२. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

सुमणं < सुमनस्–सुमनः–संस्कृत में यह नपुंसकलिंग है और प्राकृत में भी इसे नपुंसकलिंग ही माना गया है।

सम्मं < शर्मन्–शर्म– ,, ,,

चम्मं < चर्मन्–चर्म– ,, ,,

(ख) दामं < दामन्–दाम–संस्कृत के समान नपुंसकलिंग ही है।

सिरं < शिरस्–शिरः– ,, ,,

नहं < नभस्–नभः– ,, ,,

(३) अक्षि (आँख) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादिगण के शब्द पुल्लिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।[१] अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी होने से इसका प्रयोग स्त्रीलिंग में भी होता है[२]। यथा–

अच्छी < अक्षिणी–संस्कृत में नपुंसकलिंग, पर यहाँ विकल्प से पुल्लिंग।

अच्छीइं<अक्षिणी –संस्कृत में नपुंसकलिंग, यहाँ भी विकल्प से नपुंसकलिंग।

एसा अच्छी < एतदक्षि–यहाँ स्त्रीलिंग में व्यवहार है।

चक्खू < चक्षुषी–संस्कृत में नपुंसकलिंग किन्तु प्राकृत में पुल्लिंग।

णअणो (पुल्लिंग) णअणं (नपुंसकलिंग)	नयनम्–संस्कृत में नपुंसकलिंग, किंतु प्राकृत में विकल्प से पुल्लिंग।		
लोअणी (पुल्लिंग) लोअणं (नपुंसक)	लोचनम्–	,,	,,
वअणो (पुल्लिंग) वअणं (नपुंसक)	वचनम्–	,,	,,
कुलो (पुल्लिंग) कुलं (नपुंसक)	कुलम्–	,,	,,
माहप्पो (पुल्लिंग) माहप्पं (नपुंसक)	माहात्म्यम्–	,,	,,
छन्दो (पुल्लिंग) छन्दं (नपुंसक)	छन्दः–	,,	,,
दुक्खा (पुल्लिंग) दुक्खाइं (नपुंसक)	दुःखानि–	,,	,,
भायणा (पुल्लिंग) भायणाइं (नपुंसक)	भाजनानि–	,,	,,

१. वाक्यर्थ–वचनाद्याः ८।१।३३. हे.।

२. अञ्जल्यादिपाठादक्षिशब्दः स्त्रीलिङ्गेपि ८।१।३३. की वृत्ति।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(४) किसी–किसी आचार्य के मत से पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[१] यथा–

पुट्ठी (स्त्रीलिंग) } पृष्ठम्–संस्कृत में नपुंसकलिंग है, पर प्राकृत में विकल्प
पुट्ठं (नपुंसक) } से स्त्रीलिंग भी है।

अच्छी (स्त्रीलिंग) } अक्षि– ,, ,,
अच्छं (नपुंसक) }

पण्हा (स्त्रीलिंग) } प्रश्नः–संस्कृत में यह पुल्लिंग है, पर प्राकृत में विकल्प
पण्हो (नपुंसक) } से स्त्रीलिंग भी होता है।

(५) गुणादि शब्द विकल्प से नपुंसकलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[२]

गुणं (नपुंसक) } गुणः–संस्कृत में गुण शब्द पुल्लिंग है, पर प्राकृत में इसका
गुणो (पुल्लिंग) } व्यवहार पुल्लिंग और नपुंसकलिंग दोनों में होता है।

देवाणि (नपुंसक) } देवाः–संस्कृत में देव शब्द नित्य पुल्लिंग है, पर प्राकृत
देवा (पुल्लिंग) } में यह विकल्प से नपुंसकलिंग भी होता है।

खग्गं (नपुंसक) } खड्गः–खड्ग शब्द संस्कृत में पुल्लिंग है पर प्राकृत
खग्गो (पुल्लिंग) } विकल्प से।

मंडलग्गं (नपुंसक), मंडलग्गो (पुल्लिंग) < मंडलाग्रः– ,,
कररूहं (नपुंसक), कररूहो (पुल्लिंग) < कररुहः– ,,
रुक्खाइं (नपुंसक), रुक्खा (पुल्लिंग) < वृक्षाः– ,,

(६) इमान्त–इमन् प्रत्यय जिनके अन्त में आया हो और अञ्जल्यादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होते हैं।[३]

इमान्त शब्द–

एसा गरिमा (स्त्रीलिंग), एसो गरिमा (पुल्लिंग) < एष गरिमा।
एसा महिमा (स्त्रीलिंग), एसो महिमा (पुल्लिंग) < एष महिमा।
एसा धुत्तिमा (स्त्रीलिंग), एसो धुत्तिमा (पुल्लिंग) < एष धूर्त्तता।

---

१. पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ४।२०. वर.।

२. गुणाद्याः क्लीबे वा ८।१।३४. हे.।

३. वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् ८।१।३५. हे.।

अञ्जल्यादिगण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द गृहीत हैं। कल्पलतिका के अनुसार रश्मि शब्द विकल्प से स्त्रीलिंग ही है।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अञ्जल्यादिगण के शब्द–

एसा अंजली (स्त्री), एसो अंजली (पु.) < एष अञ्जलिः।

चोरिआ (स्त्री.), चोरिओ (पु.) < चौर्यम्।

निही (स्त्री.), निही (पु.) < निधिः।

विही (स्त्री.), विही (पु.) < विधिः।

गंठी (स्त्री.), गंठी (पु.) < ग्रन्थिः।

रस्सी (स्त्री.), रस्सी (पु.) < रश्मिः।

(७) जब बाहु शब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है। पर जब पुल्लिग में प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है।[१] यथा–

एसा बाहा (स्त्री.), एसो बाहू (पु.) < एष बाहुः।

स्त्रीप्रत्यय

स्त्रीलिंग शब्द दो प्रकार के होते हैं–मूल स्त्रीलिंग शब्द और प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिंग शब्द। जिन शब्दों का अर्थ मूल से ही स्त्रीवाचक है और रूप पुल्लिग और नपुंसकलिंग में नहीं होते, उनको मूल स्त्रीवाचक शब्द कहते हैं। यथा–लदा, माला, छिहा, हलिद्दा, मट्टिआ, लच्छी, सप्पिणी आदि।

प्रत्यय के योग से बने स्त्रीलिंग शब्द मूल से स्त्रीलिंग नहीं होते, किन्तु स्त्रीप्रत्यय जोड़ देने से उनमें स्त्रीत्व आता है। ऐसे शब्द जोड़ीदार होते हैं अर्थात् पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों लिगों में व्यवहृत होते हैं। अतः स्त्रीप्रत्यय–वे प्रत्यय हैं, जिनके लगने पर पुल्लिंग शब्द स्त्रीलिंग हो जाते हैं। संस्कृत में टाप्, डाप् , चाप् (आ); ङीप् , ङीष् , ङीन् (ई); ऊङ् (ऊ) और ति ये आठ स्त्रीप्रत्यय हैं; पर प्राकृत में आ, ई और ऊ प्रत्यय ही होते हैं। अधिकांश प्राकृत शब्दों में संस्कृत के समान ही स्त्रीप्रत्यय का विधान किया गया है।

(१) सामान्यतया प्राकृत में अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए आ प्रत्यय लगता है। यथा–

अअ + आ = अआ < अजा; चडअ + आ = चडआ < चटका।

मूसिअ + आ = मूसिया < मृषिका; बाल + आ = बाला < बाला।

वच्छ +आ = वच्छा < वत्सा; होड + आ =होडा (छोकरी)

कोइल + आ = कोइला < कोकिला; चवल < चवला; कुसल < कुसला।

---

१. बाहोरात् ८।१।३६. हे.।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

निउण–निउणा, अचल–अचला, मलिण–मलिणा, चउर–चउरा, पढम–पढमा। वीय–वीया।

(२) स्त्रीलिंग में सस–स्वस्र आदि शब्दों से पर में आ प्रत्यय जोड़ने से ससा आदि रूप होते हैं।[१]

(३) संस्कृत के नकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है। यथा–राया + ई = राणी, माहण + ई = माहणी; बंभण + ई – बंभणी। हत्थि–हत्थिणी।

(४) रकारान्त, तकारान्त और अय्, अज्, ठक् और ठञ् प्रत्ययों से बने संस्कृत शब्दों से प्राकृत में प्रायः स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जुड़ता है। यथा–

रकारान्त–कुंभआर + ई = कुंभआरी, कुम्हारी; लोहआर–लोहआरी; कुमार–कुमारी।

तकारान्त–सिरीमअ + ई = सिरीमई; पुत्तवअ–पुन्तवई ; धणवअ–धणवई।

(५) संस्कृत के षित् शब्दों–नर्तक, खनक, पथिक प्रभृति तथा गौर, मनुष्य, मत्स्य, शृंग, पिङ्गल, हय, गवय, ऋष्य, द्रुण, हरिण, कोकण, अणक, आपलक, शष्कुल, वदर, उभय, नर और मंगल शब्दों में स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्राकृत में ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

गट्ठअ + ई = गट्ठई, खणअ + ई = खणई, पहिअ + ई = पहिई, कुमार + ई = कुमारी, किसोर–किसोरी, सुन्नर–सुन्नरी, णअ–णई, पड–पडी, कअल–कअली, थल–थली, काल–काली, मंडल–मंडली आदि।

(६) जाति अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा–

सीह + ई = सीही, वग्घ + ई = वग्घी, मअ + ई = मई, हरिण–हरिणी, कुरंग–कुरंगी, सूअर–सूअरी, जंबुअ–जंबुई, सियाल–सियाली, विडाल–विडाली, घोड–घोडी, महिस–महिसी, हंस–हंसी, सारस– सारसी, गोव–गोवी, चंडाल–चंडाली, बंभण–बंभणी, रक्खस–रक्खसी, निसाअर–निसाअरी।

(७) पाणिनि के 'टिड्ढाणञ्' इत्यादि (४।१।१५) से अण् आदि प्रत्यय निमित्तक ङीप् होता है, पर प्राकृत में विकल्प से ई होता है।[२] यथा–साहणी–साहणा; कुरुचरी–कुरुचरा आदि।

---

१. स्वस्रादेर्डा ८।३।३५ हे.। २. प्रत्यये ङीर्न वा ८/३।३१. हे.

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(८) संस्कृत के अजातिवाचक पुल्लिङ्ग शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिंग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय होता है।[१] यथा–

नीली–नीला; काली–काला; हसमाणी–हसमाणा; सुप्पणही–सुप्पणहा; इमीए–इमाए; इमीणं–इमाणं; एईए–एआए; एईणं–एआणं।

(९) संस्कृत के छाया और हरिद्रा शब्दों को प्राकृत में स्त्रीलिंग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जुड़ता है।[२] यथा–

छाही–छाया; हलद्दी–हलद्दा।

(१०) सु, अम् और आम्, सुप् (सभी विभक्तियों) के पर में रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिंग में ई प्रत्यय विकल्प से होता है।[३] यथा–

कीओ–काओ; कीए–काए; कीसु–कासुः जीओ–जाओ; तीओ–ताओ।

(११) पुल्लिंग शब्द जो नर का द्योतक है, उससे स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। पर पालकान्त शब्दों में ई प्रत्यय नहीं जुड़ता है। बंभणस्सा जाया बंभणी, सुद्दस्स जाया सुद्दी, गणअस्स जाया गणई, णाविअस्स जाया णाविई, णिसाअस्स जाया णिसाई।

(१२) संस्कृत के जानपद, कुण्ड, गोण, स्थल, भाग, नाग, कुश, कामुक आदि शब्दों से प्राकृत में स्त्रीलिंग बनाने के लिए विकल्प से ई प्रत्यय जोड़ा जाता है। ई प्रत्यय के अभाव में आ होता है। यथा–

जाणवद + ई–जाणवदी; कुंडी–कुंडा, थली–थला, गोणा–गोणी, भागा–भागी, कुसी–कुसा।

(१३) संस्कृत के इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड, आचार्य, हिम, अरण्य, यवन, मातुल और उपाध्याय शब्दों से प्राकृत में ई लगने के पूर्व आण जोड़ दिया जाता है–

इंद + ई = इंदाणी; भव + ई = भवाणी; सव्व + ई = सव्वाणी, रुद्राणी, मिडाणी, आयरियाणी, जवणाणी, माउलाणी, उवज्झायाणी।

(१४) धर्मविधि से पाणिग्रहण (विवाह) अर्थ प्रकट हो तो संस्कृत के पाणिग्रहण शब्द से प्राकृत में ई प्रत्यय होता है। यथा–

पाणिगहीदी–धर्मविधि पूर्वक विवाह की गयी पत्नी।

पाणिगहीदा–अन्य किसी प्रकार से विवाह की गयी पत्नी।

---

१. अजातेः पुंसः ८।१।३२.
२. छाया–हरिद्रयोः ८।३।३४.
३. किं–यत्तदोस्यमामि ८।३।३३.

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

(१५) आर्य और क्षत्रिय शब्दों से ई प्रत्यय और आन का आगम विकल्प से होता है। यथा–

अय्या–अय्याणी, खतिया–खत्तिआणी।

(१६) बहुब्रीहि समास होने पर अवयववाचक शब्द के उत्तर में विकल्प से ई प्रत्यय होता है। यथा–

चन्दमुही–चन्दमुहा, सुएसा–सुएसी, तंबणहा–तंबणही।

(१७) नखान्त और मुखान्त शब्दों से प्राकृत में विकल्प से ई होता है। यथा–

वज्जणहा–वज्जणही, गोरमुहा–गोरमुही, कालमुहा–कालमुही।

(१८) जिन शब्दों के उत्तरपद में पाक, कर्ण, पर्ण, पुष्प, फल, मूल और वाल हों, उन शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने के लिए ई प्रत्यय होता है। यथा–

संउअण्णी; सालवण्णी; संखपुप्फी, दामीहली, दब्भमूली, गोवाली।

(१९) नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण और श्रृंग शब्दों से विकल्प से ई प्रत्यय होता है। यथा–

तुंगनासिआ, तुंगनासिई; दीहोअरा, दीहोअरी।

कतिपय अध्ययनीय शब्द

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
राया < राजा	राणी < रानी
विउसो < विद्वान्	विउसी < विदुषी
माणुसो < मनुष्यः	माणुसी < मानुषी
माउलो < मातुलः	माउली, माउलाणी < मातुलानी
मच्छो < मत्स्यः	मच्छी < मत्सी
गिहवइ < गृहपतिः	गिहवण्णी < गृहपत्नी
अहिवइ < अधिपतिः	अहिवण्णी < अधिपत्नी
तुअ < तुदन्	तुअंती < तुदन्ती
सहा < सखा	सही < सखी
मुणि < मुनिः	मुणी < मुनिः
साहु < साधुः	साहू < साधुः
जुवा < युवा	जुवई < युवती
सुएसो < सुकेशः	सुएसी, सुएसा < सुकेशी, सुकेशा
धीवरो < धीवरः	धीवरी < धीवरी
सुद्दो < शूद्रः	सुद्दा, सुद्दी < शूद्रा, शूद्री

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

आयरिओ < आचार्यः	आयरिआणी, आयरिआ < आचार्यानी, आचार्या
खत्तियो < क्षत्रियः	खत्तिया, खत्तियाणी < क्षत्रिया,क्षत्रियाणी
उवज्झायो < उपाध्यायः	उवज्झाया, उवज्झायाणी < उपाध्याया, उपाध्यायानी
पढ < पठन्	पढन्ती < पठन्ती
अय्य	अज्जआ
धीवरो < धीवरः	धीवरी < धीवरी
कुंभआरो < कुम्भकारः	कुंभआरी < कुम्भकारी
सुवण्णआरो < स्वर्णकारः	सुवण्णआरी < स्वर्णकारी
बालओ < बालकः	बालिआ < बालिका
पुरिसो < पुरुषः	इत्थी < स्त्री
किन्नरो < किन्नरः	किन्नरी < किन्नरी
माहणो < ब्राह्मणः	माहणी < ब्राह्मणी
गोवो < गोपः	गोवी < गोपी; गोवा < गोपा
मऊरो < मयूरः	मऊरी < मयूरी
पिओ < पिता	माआ < माता
भाया < भ्राता	बहिणी < भगिनी
कच्छवो < कच्छपः	कच्छवी < कच्छपी
सुत्तगारो < सूत्रकारः	सुत्तगारी < सूत्रकारी
वुत्तिगारो < वृत्तिकारः	वुत्तिगारी < वृत्तिकारी
सीसो < शिष्यः	सीसा < शिष्या
हत्थि < हस्तिः	हत्थिणी < हस्तिनी
सेट्ठि < श्रेष्ठी	सेट्ठिणी < श्रेष्टिनी
गंधिओ < गन्धिकः	गंधिआ < गन्धिका
पइ < पतिः	भज्जा < भार्या
नडो < नटः	नडी < नटी
चन्दमुहो < चन्द्रमुखः	चन्दमुही < चन्द्रमुखी
पीवरो < पीवरः	पीवरी < पीवरी
इंदो < इन्द्रः	इंदाणी < इन्द्राणी
गोवालओ < गोपालकः	गोवालिआ < गोपालिका
कामुओ < कामुकः	{ कामुआ < कामुका कामुई < कामुकी

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पढमो < प्रथमः	पढमा < प्रथमा
बीयो < द्वितीयः	वीया < द्वितीया
निउणो < निपुणः	निउणा < निपुणा
चवलो < चपलः	चवला < चपला
अयलो < अचलः	अयला < अचला
सुप्पणहो < शूर्पनखः,	सुप्पणहा, सुप्पणही < शूर्पनखी, शूर्पनखा
महिसो < महिषः	महिसी < महिषी
अओ < अजः	अआ < अजा
चडओ < चटकः	चडआ < चटका
भवो < भवः	भवाणी < भवानी
संखपुप्फो < शंखपुष्पः	संखपुप्फी < शंखपुष्पी
तरुणो < तरुणः	तरुणी < तरुणी
णायओ < नायकः	णायिआ < नायिका
रुद्दो < रुद्रः	रुद्दाणी < रुद्राणी

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY